International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 6; November 2016; Page No. 77-78

डॉ. सूर्यबाला के साहित्य की प्रेम तात्विक दृष्टि

नीरजा सिंह
हिन्दी विभाग, राजस्थान वि.वि., जयपुर, भारत।

प्रस्तावना

डॉ. सूर्यबाला जी का कहानी संग्रह 'एक टूकड़ा कस्तूरी' प्रेम कथाओं को लेकर लिखा गया है। अपने कथा–संसार में सूर्यबाला जी प्रेम के अत्यन्त आदर्श रूप को लेकर चलती है।

''मिलन का नाम मल लो, मैं विरह में चिर हूं।''

महादेवी जी की यह पंक्ति लेखिका की प्रेम संबंधी मान्यता पर एकदम सटीक बैठती है। दैहिकता व वासना से पूर्णतः परे इनका प्रेम मिलन–वेला में सार्थक न होकर स्मृतियों में जीविता रहता है। जहाँ नायक–नायिका कर्त्तव्य–पथ पर अभ्रषित हो प्रेम के महान् आदर्शों को स्थापित करते हैं। डॉ. चन्द्रकला त्रिपाठी ने संग्रह की भूमिका में ही इसे कुछ इस प्रकार व्यक्त किया है कि –

''सूर्यबाला की प्रेम कहानियों में 'प्रेम' का एक बहुत ही संजीदा, जवाबदेह और मानवीय रूप निखर कर आता है। सबसे पहले इसकी गहराई, मजबूती व सूक्ष्मता पर ध्यान जाता है। इस सूक्ष्मता में कहीं न कहीं ऐसी अतीन्द्रियता शामिल है, जो देह के निषेध की चौकसभरी शुद्धतावादी दखल नहीं है, बल्कि जिसमें हृदय ही सारी जगह ले लेता है।''

संग्रह की पहली कहानी है 'कागज की नावें चांदी के बाल।'' यह कहानी स्मृतियों में जीवित बालपन के सहज व निःस्वार्थ प्रेम की एक मीठी याद को लेकर लिखी गई है। जीवन की सारी सच्चाईयों से रूबरू होने के पश्चात् भी, उम्र के एक लंबे फासले को लांघ कर भी बचपन के उस प्रेम का शूक्ष्म व झंकृत कर देने वाला स्वरूप, पाठक को भी एक मीठी वेदना से भर देता है। कहानी की पूरी संवेदना लेखिका इन चंद पंक्तियों में जीवन्त कर देती है।

''और अचानक एक सपना–सा देखती हूं मैं.....बरसाती बरसात का यह हलकोरता पानी ढ़लानों से बहता हुआ एक कोठी के दरवाजे से जा लगा है। वहाँ एक छोटा–सा लड़का चहककर एक नाव उठा लेता है और कुतुहल से देखता है। उसमें रखा एक रूपहला चांदी के रेशे–सा बाल।'' [1]

कहानी में लेखिका ने यह भी बताया है कि किस तरह वर्ग–भेद का यथार्थ प्रेम जैसे मानवीय व सूक्ष्म भाव को भी बाँट कर रख लेता है।

'वे जरी के फूल' कहानी प्रेम की सौंधी स्मृतियों व उसकी महक को लेकर लिखी गयी है, जहाँ सबसे ज्यादा मुखर है प्रेम पर गहरा व दृढ़ विश्वास रखने वाला मन। जिस पर अनबोले–अनकहे–अनसुने रह जाने की अभिशप्त नियति गूंथी हुई है। किशोर जीवन के आँख मिचौली के प्रेम को लेखिका ने भावनाओं में पिरोकर व्यक्त किया है। पूर्वदीप्ति शैली में लिखी गई इस कहानी में कर्त्तव्य व प्रेम के द्वन्द्व को सूक्ष्मता से बताया है, और उस अनकहे प्रेम के लिए कर्त्तव्य का निर्वाह व कर पाने की वेदना को सूर्यबाला कुद ऐसे शब्दायमान करती है–

''लेकिन यह मन भी कितना गहरा तिलस्म है न। हर अनुभूति सिर्फ दुःख या सुख ही नहीं देती और कभी–कभी तो दुःख व सुख का फासला इतना कम हो जाता है कि उन्हें अलग करना भी मुश्किल हो जाता है।'' [2]

सुख–दुःख व कर्त्तव्य–प्रेम के इस निरन्तर चलने वाले द्वन्द्व को कथाकार ने मार्मिक प्रभाव के साथ व्यक्त किया है।

'लाल पलाश के फूल' कहानी जीवन के यथार्थ के साथ ही साथ पारम्परिक भावनाओं के सूक्ष्म स्पंदन का चित्रण करती है।

'एई कोरछो भालो निठुर रे.....निठुर रे.....।'

गीत पाठक पर एक कारूणिक प्रभाव छोड़ता है। बरसों से अन्तराल के बाद भी अधूरे प्रेम की कसक को जीवन्त करती यह कहानी सामाजिक दायरों में बंध कर पूर्णता को प्राप्त न कर पाने की कचोट का तीखा दस्तावेज है। वृंदा के प्रति अनूप का भावनात्मक आकर्षण या प्रेम ही कह लो तो ज्यादा सटीक है, के माध्यम से लेखिका ने प्रेम के आदर्श स्वरूप को व्यक्त किया है। अधूरे रहे प्रेम की वेदना को लेखिका अनूप के इस आत्मकथन से व्यक्त करती है–

''मैं लाल पलाश लाने के लिए आगे बढ़ता हूं। कि कोई खींच लेता है, जकड़ लेता है– लौटो–लौटो, तुम्हे लाल पलाश नहीं ले जाना है, पीला गेंदा नहीं ले जाना है, बहकों मत।'' [3]

'न किन्नी न' कहानी प्रेम के उस स्वरूप को चरितार्थ करती है जहाँ लेन–देन के सख्त नियम लागू नहीं होते, बल्कि सब कुछ समर्पित कर गरीब हो जाने की ऐसी अमीरी हो, जिसमें किसी तरह का दुराव–छिपाव, अवसाद, पछतावा व ठग लिये जाने की भावभूमि के लिये कहीं कोई गुंजाइश नहीं रह जाती है। किन्नी के माध्यम से लेखिका ने यौवन के प्रथम प्रेम का जीवन्त व संगीतमय चित्र कुद इस तरह उपस्थित किया है–

''अब चिलचिलाती धू में कॉलेज से जल्दी–जल्दी घर की ओर बढ़ते कदम अचानक चाची के घर के सामने से गुजरते हुए ठहरने से लगते।'' आहिस्ते बहुत आहिस्ते–आहिस्ते, थकान का छल खुद अपने–आपसे।

प्रेम की प्रथम फुहार की सौंधी खूशबू का जो प्रभाव किन्नी उर्फ किरण पर होता है, बिना कुछ सोचे–समझे अपने अर्न्तमन को पूर्ण समर्पित करते हुए एकनिष्ठ प्रेम का यह रूप अद्भूत बन पड़ा है।

''प्रेम झुकता नहीं, टूटता नहीं, जीवित रहता है परत–दर–परत।''

किन्नी विपरीत परिस्थियों में भी अपना आत्सम्मान बनाये रखती है। कर्त्तव्य–निर्वाह करती हुई उत्सर्ग भी करती है व अंत में अपने एकांतिक प्रेम को प्राप्त कर विजयी भी होती है। प्रेम रूपी कस्तूरी का जो प्रभाव किरन पर ऐसा होता है कि उसका पूरा व्यवहार ही बदल जाता है। भाव जगत में विचरण करती हुई स्त्री को प्रेम कितना प्रभावित व परिवर्तित कर देता है, उसके संपूर्ण आस्तित्व का समर्पण ग्रहण कर अपने में ही मग्न कर देता है, स्वयं लेखिका ने इसे कुछ इस तरह बताया है–

''मुझे सचमुच खबर नहीं थी कि अपने आंचल में कस्तूरी का एक छोटा–सा टुकड़ा बांधे चली आई थी। जैसे एक रेशमी पारदर्शी दुपट्टा–सा मेरे माथे पर, मेरे कंधों पर गिरा हो। और इस आवरण में लिपटी मेरे लिए अब सब कुछ सुन्दर था, सब कुछ शुभ–संकल्पमय व मोहक।''

सूर्यबाला जी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मानवीय संबंधों को महत्ता देती है। उनके प्रेम का स्वरूप भी मानवीय धरातल पर विकसित हुआ है। 'सांझबाती' कहानी में दाम्पत्य प्रेम का जो स्वरूप है, वह संपूर्णतः पाक साफ हृदय की निश्छल प्रतिध्वनि है। विवाह से लेकर वृद्धावस्था तक जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में एक–दूसरे का साथ निभाते दम्पत्ति संतानों की अनदेखी व स्वार्थपरता का शिकार हो, एक दूसरे से अलग रहकर भी प्रेमपथ का निर्वाह करते है, यह एक अमूल्य निधि है। प्रेम के उपयोगितावादी दृष्टिकोण पर लेखिका ने वृद्धा के इस कथन से तीखा व्यंग्य किया है।

''ये एक थाली में खाते नहीं'' इसलिए एक–दूसरे की बात भी नहीं समझते, बस अपनी–अपनी समझदारी की दुहाई चीखते–चिलाते रहते हैं।[4]

दूसरी ओर दाम्पत्य जीवन के अटुट प्रेम का चित्रण कर लेखिका पाठकों से व्यक्तिगत स्वाथ–बंधनों से ऊपर उठकर संबंध निर्वाह की ताकीद करती है–

''कोठरी में उजास फैली थी और उन दो काँपती दुआओं में लथपथ हथेलियों में प्यार से लबालब रिश्तों का एक पूरा समंदर समा गया था।''[5]

'पीले फूलों वाले फ्रॉक' कहानी भी प्रेम के उस पक्ष को चित्रित करती है, जहाँ प्रेम स्मृतियों में सजीव व स्पंदित होकर बसा हुआ है। उनके प्रेम की तरलता में हृदय का अनुपम विस्तार है। जैसे–कबीर कहते हैं कि

''प्रेम न बाड़ी उपजै, प्रेम न हाट बिकाया।''

यह कहानी स्त्री के अतीत के सत्य का प्रतिनिधित्व करती है, जहाँ प्रेमभाव की स्वीकृति न होते हुए भी वह अन्तर्मन में सदैव–सदैव के लिये दैदीप्यमान व जीवित रहता है। 22 वर्ष पहले का उसका अल्हड़ अतीत जो आज भी जीवित है और कहीं न कहीं उसक विमुग्ध कर देता है, ऐसा ऐहिक प्रेम समकालीन कथा–साहित्य में सूर्यबाला जी की कहानियों में ही दिखाई पड़ता है। मसलन–

''कहना चाहती हूं कि लो यह मेरी जिन्दगी का इतने घंटे, इतने मिनट लंबा और इतने मिनट चौड़ा टुकड़ा तुम्हारे नाम..... यह टुकड़ा मैं तुम्हारे नाम कर रही हूं।''

''यह सिर्फ मेरा अपना और तुम्हारा है।''
''इसमें और किसी की साझेदारी नहीं।''[6]

'मानसी' कहानी सुन्दर संतुष्ट गृहस्थ जीवन के तेजस्वी स्वरूप को चरितार्थ करती हुई अवचेतन में बसे हुए प्रथम प्रेम की कहानी है। रवि के अवचेतन में बसी वि उसे अनुप्राणित करती हुई कंणा की छवि ही इस कहानी की मुख्य प्रेरणा है। यह कहानी प्रमाणित करती है कि अधूरे रहने के पश्चात् भी जीवन के सुखद अनुभव स्फूर्तिदायी जीवनी से भर देने वाले होते है। कहानी में प्रेम अजस्त्र ऊर्जा के स्त्रोत के रूप में दिखाई देता है–

''यह कैसा सम्मोहन बंधन है, कंणा। इसका किसी नीति, संहिता से सरोकार नहीं होता है।''[7]

इस प्रकार सूर्यबाला जी अपने कथा संसार से नितांत अलग व एंटीक जीवन दृष्टि व प्रेम दृष्टि लेकर चलती है। आज के युग के दैहिक व भौतिक, उपयोगितावादी प्रेम से पूर्णतः परे उनका प्रेम मानवीय धरातल पर अवस्थित है।

वे स्वयं कहती है– ''मुझे जीवन प्रिय है। बहुत–बहुत प्रिय है। मैं जीवन के प्रति महामोहग्रस्त हूं और इस जीवन में मिली तमाम–तमाम वस्तुओं में सबसे ज्यादा आस्था व सम्मान मैं मानवीय संबंधों को देती हूं।''

प्रेम का जो स्वरूप आज दुर्लभ है, उसे लेकर लेखिक ने जो भावप्रवण, आदर्श व प्रेरणादायी चित्र उपस्थित किये है, वह अनुपम है। लीक से अलग–अलग हटकर चलती सूर्यबाला जी की प्रेम संबंधी मान्यता के अवशीलन से यह स्पष्ट है कि वह उनके माध्यम से अनकही–अनछुही भावनाओं व पहलुओं को व्यक्त करती है व पाठकों से भी उन्हें सुने जाने की ताकीद करती है। बने बनाये पैमाने से अलग हटकर लिखी गयी यह कहानियां मार्मिक व खूबसूरत बन्द पड़ी है। बिना किसी नारे को मुखर किये लेखिका ने अपनी बात सामने रख दी है। यह पक्ष उन्हें साहित्यकारों की जमात से अलग सिद्ध कर देता है।

संदर्भ गर्थ

1. डॉ. सूर्यबाला लाल, एक टुकड़ा कस्तुरी, अमन प्रकाशन, 2014, पृ.सं. 15
2. डॉ. सूर्यबाला लाल, एक टुकड़ा कस्तुरी, अमन प्रकाशन, 2014, पृ.सं. 25
3. डॉ. सूर्यबाला लाल, एक टुकड़ा कस्तुरी, अमन प्रकाशन, 2014, पृ.सं. 81
4. डॉ. सूर्यबाला लाल, सांझबाती, ग्रंथ अकादमी, 2015, पृ.सं. 110
5. डॉ. सूर्यबाला लाल, सांझबाती, ग्रंथ अकादमी, 2015, पृ.सं. 111
6. डॉ. सूर्यबाला लाल, एक टुकड़ा कस्तुरी, अमन प्रकाशन, 2014, पृ.सं. 105
7. डॉ. सूर्यबाला लाल, एक टुकड़ा कस्तुरी, अमन प्रकाशन, 2014, पृ.सं. 110